Agriculture model for 1 Acre

s.no	item	quntity	costing
01	Bamboo (h-10 feet,w-1.25 to 1.5 inch)	1450 pes (15rs)	21750/-
02	Wire (20 gaze)	125 kg (75rs)	9375/-
03	Wire (18 gaze)	125 kg (75rs)	9375/-
04	Ghass (minimum 5 feet hight)	(1 trolly)	8000/-
05	Lakdi (Wood stick) (h-5 feet,w-0.25 inch)	1000 pes(3rs)	3000/-
06	Green net (h-10 feet,l-150 feet) or Sharee (250 pes)	6 roll (3000rs)	18000/-
07	Ghade (20 liter)	6 pes (100rs)	600/-
08	Watering system	Mini foger	2000/-
09	Soil treatment	chuna 100kg,neem powder-50kg	2000/-
10	Seeds for cultivating	One aker(layer farming)	50000/-
11	Vermiunit complet	5 unit(3750rs)	18750/-
12	Fiting material (stemp,pvc paipe,tee,band,kabil,tank)	Stemp-80 pes(21 rs),pvc paipe-60feet(200rs),tee-6 pes(25rs),band-2(25rs),kabil-5pes(25 rs),tank-1 pes(1000rs)	3755/-
13	Other fertilizer prepation (matka khad)	20kg-cow dung,20liter- cow urin,2kg urad dall aata,2kg-gud,2kg-mustard khali	1000/-
14	Compost manuare	10 –trolly(1600)	16000/-
15	Prom composting manure (rock phosphate,cow dung,cow urin)	rock phosphate-250kg(3 rskg),cow dung-750kg(1 rs kg),cow urin-100liter(5rs liter)	2000/-
16	Equipment –geti,favda,tasla,panja,plas,blad,kulari,aari patti,athoda,tokri,hasiya,kechi,sutli,sarpat,magga,Balti,	Every one 01 pes	3000/-
17	Labour ex		25000/-
18	Other ex		15000/-
Total			208605/

नेचुरल 5 लेयर फार्मिंग कृषि मॉडल (1 एकड़)

[illegible] अदरक, चौलाई/पालक/धनिया, कुन्दरू, करेला/टमाटर/लौकी/तोरई, पपीता

[illegible] 1 फरवरी से 30 मार्च तक

मिट्टी का उपचार : 100 किलो चूना पाउडर के साथ 50 किलो नीम पाउडर मिलाकर प्रति एकड़ खेत में छिड़काव करें।

बाँस लगाने की विधि : (क) बाँस 10 फीट की हाईट या उससे ज्यादा भी ले सकते है। सर्वप्रथम किनारे से शुरू करते हुये बाँस को 5-5 या 6-6 फीट के अन्तर से ज़मीन में लगभग 1 से 1.25 फीट गहराई में लगाते है। देखें चित्र

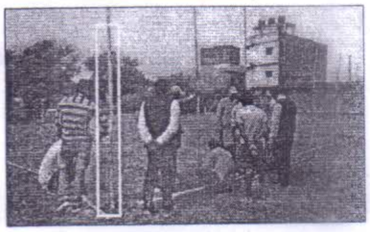

(ख) फिर 7 फीट की हाईट पर किनारे लगे सभी बाँस को होरिजेन्टली एक दूसरे से तार (जी.आई. वॉयर कच्चा) के माध्यम से जोड़ते चले जाते है। देखें चित्र

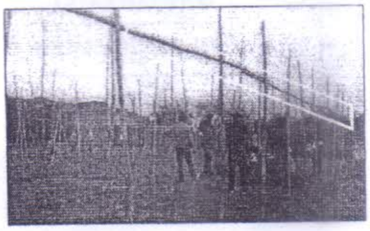

(ग) अब 15-15 या 20-20 फीट की दूरी पर पीछे की तरफ खड्डा करके 3 फीट के बाँस को 2 फीट की गहराई में लगा दिया जाता है। और खड़े किये स्ट्रक्चर को तार (जी. आई. वॉयर 20 गेज स्टेनलेस स्टील) के माध्यम से खींच कर चारों ओर से टाईट कर दिया जाता है। जिससे स्ट्रकचर को हवा इत्यादि से कोई नुकसान न हो और मजबूती मिल सकें। देखें चित्र

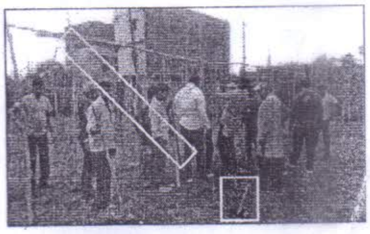

4. अब तार (जी.आई. वॉयर 20 गेज स्टेनलेस स्टील) के माध्यम से सभी बाँस को आपस में बाँध दिया जाता है। देखें चित्र

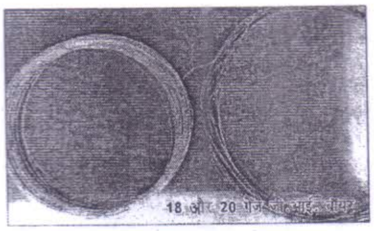

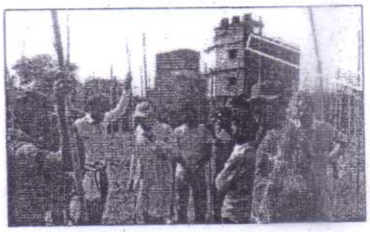

5. अब तारं (जी.आई. वॉयर 18 गेज स्टेनलेस स्टील) के माध्यम से 20 गेज के तार को आपस में 8 से 9 इंच की दूरी पर एक दूसरे से लपेटते हुये पूर स्ट्रक्चर को बाँध लेना है। इस तरह से आपका स्ट्रक्चर पूरी तरह से खड़ा हो जायेगा। देखें चित्र

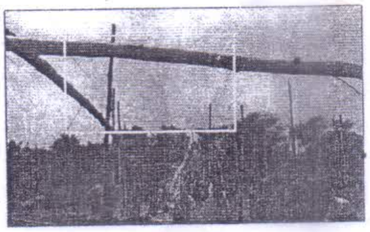

[illegible] बनाने की विधि : पतवार, घास या सूखे धान के पैरे को ऊपर की ओर उचित दूरी लगभग डालने के बाद ऊपर की तरफ बाँस के पंतले टुकड़े के माध्यम से बाँध लेना है। ये जरूर देख ले कि 50 प्रतिशत धूप आपके खेत में जरूर आयें। देखें चित्र

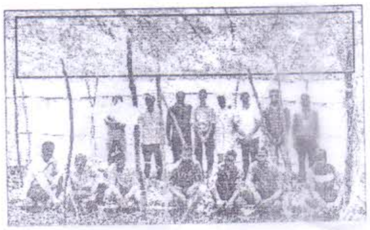

1. [illegible] सग कचुआ खाद (डा.ए.पी. का [illegible]) बनान को विधि : सवपथम 700 किला गाय क गाबर म 300 किला राक फास्फट अच्छो तरह स मिलाकर (दिखाय गय चित्र) बग म भर कर उसम लगभग 5 किला दशो कचुआ छाड द, बारो स ढक द आर हर 20 दिन क बाद खाद का पलटत रह 60 दिन बाद आपको खाद पूरो तरह स तयार हा जांयगो

राक फास्फट सग कचुआ खाद

2. मटका खाद बनान को विधि : सामागो - 10 किला दशो गाय का गाबर, 10 लोटर गामूत्र, 01 किला बसन, 500 गाम गुड (01 वष पुराना हा ता बहतर), 01 किला उडद को दाल का आटा इन सभो का अच्छ स मिलाकर 07 दिना तक छाया म मिट्टो क बतन म रखकर तयार खाद मटका खाद कहलातो ह इसक उपयाग स पाधा को वद्धि हाना, पत्तिया एव शाखाआ म वद्धि हाना आर उत्पाद को गुणवत्ता हाना

मटका खाद

3. रस चसक कोटनाशक बनान को विधि : 02-02 किला नोम, सोताफल, बशम को पत्तो 01-01 किला स्वत आक, अरड आर तम्बाकू को पत्तो इन सभो का 20 लोटर गामूत्र म 21 दिन तक रखना ह आर अक निकालकर 500 मिलो. पति 15 लोटर वालो टको द्वारा स्प करना ह

रस चसक कोटनाशक दवाइ

4. तना छदक कोटनाशक बनान को विधि : 02-02 किला नोम, सोताफल, बशम, हरो तोखो मिच, 01-01 किला स्वत आक, अरड आर तम्बाकू को पत्तो, 250 गाम लहसुन इन सभो का 20 लोटर गामूत्र म 21 दिन तक रखना ह आर अक निकालकर 500 मिलो. पति 15 लोटर वालो टको द्वारा स्प करना ह

तना छदक कोटनाशक दवाइ

5. इल्लो कोटनाशक बनान को विधि : 02 लोटर 60 दिन पुरानो गाय को छाछ (मटठा) म 300 गाम हरो तोखो मिच, आर 150 गाम लहसुन का पस्ट पति 15 लोटर वालो टको द्वारा स्प करन स समस्त पकार को इल्लोया समाप्त हातो ह

इल्लो कोटनाशक दवाइ

6. बाज का उपचार (अदरक) : 10 लोटर पानो म आधा (1/2) किला खडा चूना मिलाकर 15 मिनट क लिय छाड द ततपश्चात अदरक का बारो-2 स 10 मिनट तक घाल म मिलाकर बाहर निकाल

लगान को विधि : जमोन स करोब 1 फुट ऊपर बड बना ल उसक बाद अदरक क ऊपरो भाग का ऊपर को तरफ करक 6"x6" (इच) को दूरो पर 2" अन्दर को आर लगाना ह

उत्पादन पति एकड लगभग 50 कुन्तल

बाजार मूल्य लगभग सितम्बर/अक्टूबर (रूपय 7000.00) पति कुन्तल

कुल आय : रूपय 3,50,000.00

7. बोज का उपचार (चालाइ / पालक / धनिया) : कण्ड या लकडो को राख (50 किला) म 3 किला चालाइ का बोज़ अच्छो तरह स मिलाकर छिटकाव प्र खत म कर

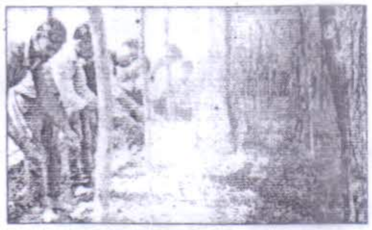

उत्पादन पति एकड 50 कन्तल

बाजार मल्य लगभग मइ / जन म (रूपय 1200.00) पति कन्तल

कल आय : रूपय 60,000.00

8. कन्दरू : इसको कलम लगतो ह इस कम स कम 2 गाठ जमोन क नोच 145 डिगो क अनपात म तिरछा करक लगाना ह

उत्पादन पति एकड लगभग 200 कन्तल

बाजार मल्य लगभग (रूपय 500.00) पति कन्तल

कल आय : 1,00,000.00

9. पपाता : 200 पाधा पति एकड इसका 12'x18' को द्रो म लगाना ह

उत्पादन लगभग : 150 कन्तल

बाजार मल्य लगभग अक्टबर / नवम्बर (रूपय 700.00) पति कन्तल

कल आय : 1,05,000.00

10. करला : 1200 पाधा पति एकड 2'x2' को द्रो म लगाना ह

उत्पादन लगभग : 60 कन्तल

बाजार मल्य लगभग मइ / जन (रूपय 2000.00) पति कन्तल

कल आय : 1,20,000.00

अदरक : रूपय 3,50,000.00
पालक : रूपय 60,000.00
कन्दरू : रूपय 1,00,000.00
पपाता : रूपय 1,05,000.00
करला : रूपय 1,20,000.00
कल आय पति वष पति एकड 7,35,000.00

Deepesh Krishak

स्थान : राजोव नगर, तिलो सागर, म.प.

आयाजक : आकाश चारसिया (उन्नत कषि अभियान परिषद)

* सभी आकड बाजार भाव आर वातावरण का परिस्थति पर आधारित ह काय शरू करन स पहल सभी पहलआ का अच्छो तरह जान ल

जैविक अपनाओ .... धरती बचाओ ... लेखक ने इस नारे को लेना तब अति-आवश्यक समझा जब उसने जहर-युक्त भोजन खाकर मानव समाज में चारों तरफ होता हुआ हा-हाकार देखां ।

लेखक ने अपना मिशन इस धरती को जहर-मुक्त बनाना जरूरी समझते हुए कृषि को अपना कार्यक्षेत्र चुना है।

इस क्षेत्र में काम करते हुए अनेक चुनोतियाँ सामने आई जैसे,

- तथाकथित ओरगेनिक /नैचुरल फ़ार्मिंग में होने वाला अत्यधिक मजदूरों पर खर्च ।
- जल संरक्षण के प्रति लोगों की अजागरूकता।
- पर्यावरण सुरक्षा के प्रति आसावधानता।
- बेरोजगार युवाओं का गाँव से शहर की तरफ पलायन तथा कृषि से लोगों का अलगाव आदि ।

2011 से इन सब क्षेत्रों में काम करते हुए धीरे-धीरे रास्ता खुलता गया और अंततः 2014 तक निजात हुई एक नई तकनीक जिसका नाम रखा गया "5 लेयर फ़ार्मिंग माडल"। लेखक ने इस उपलब्धि को अपने तक सीमित न रखते हुए इसके परिणामों को लोगों तक पहुंचाने का संकल्प लिया ।जिसके परिणामस्वरूप पूरे देश भर में 5.5 लाख किलोमीटर की यात्रा की गयी परिणामस्वरूप लाखों किसान विषमुक्त – कृषि के प्रति जागरूक हुए ।प्रति माह 27-28 तारीख को निःशुल्क 2 दिवसीय कार्यशाला के द्वारा 51,000 किसानों तक इस पद्धति को पहुंचाया गया है।परिणामस्वरूप आज भारत में कई युवा किसान प्रेरित हुए हैं तथा 106 स्थानों पर 5-लेयर फ़ार्मिंग तथा देसी बीजों के ऊपर सफलतापूर्वक कार्य चल रहा है।

5 लेयर फ़ार्मिंग माडल है क्या ?

एक वाक्य में कहा जाये तो यह माडल किसानों की अनेक समस्याओं का एक अद्भुत समाधान है।इस माडल को हम इस तरीके से अच्छी प्रकार से समझ सकते हैं जैसे शहरों में एक के ऊपर एक मकान बनाए जाते हैं ताकि कम से कम स्थान का अधिक से अधिक प्रयोग हो ठीक उसी तरह इस पद्धति में जमीन के नीचे एक के बाद एक फसल ली जाती हैं जिससे की मिट्टी के हर इंच का सर्वोत्तम सदुपयोग हो पाये।

इस पद्धति को बनाने की विधि-

- जिस क्षेत्र में हम इसे करना चाहते हैं वहाँ बांस और लोहे के तार की मदद से सबसे पहले मंडप बनाया जाता है ।
- बांस की दूरी 5-6 फीट रखी जाती है ।
- मंडप में लगाई जाने वाली फसलें उभरी हुई मेढ़ पर बोई जाती हैं।
- मेढ़ की चौड़ाई 2 फीट तथा ऊँचाई ½फीट होती है ।

पौधों की आपस में दूरी –

1.अदरक तथा हल्दी आदि 6-6 इंच की दूरी पर बोए जाते हैं ,जिनकी जड़ 2-9 इंच गहराई से अपने पोषक तत्व लेते हैं।

2.जमीन की सतह पर लाखों की मात्रा में चौलाई /पालक/धनिया/मेथी/पोई आदि बोए जाते हैं।परिणामस्वरूप ये पत्ते वाली सब्जियाँ जमी को ढक देती हैं तथा किसान की दो समस्याओं – खरपतवार नियंत्रण एवं जल संरक्षण में मदद करती हैं।पत्ते वाली सब्जियाँ जमीन की 2 इंच सतह से पोषण लेती हैं ।

* जब ये फसलें 8-10 इंच होती हैं तो इनको जड़ सहित उखाड़ कर बेच दिया जाता है ।फलस्वरूप जमीन की नूलाई हो जाती है,जिससे दूसरी फसलें अच्छी प्रकार से बढ़ पाती हैं तथा पत्ते वाली सब्जियों का अलग से मूल्य भी मिल जाता है और जमीन के सतह पर रहने से जल का बाष्पीकरण घटता है तथा 70 प्रतिशत से 80 प्रतिशत कम सिंचाई से फसलें अच्छी प्रकार से खड़ी रहती हैं।

3. तीसरी लेयर में ऊपर के जाल और नीचे के मेढ़ का बीच वाला हिस्सा प्रयोग में लिया जाता है यहाँ खीरा करेला आदि फसलें ली जाती हैं ।

4. बांस के सहारे कटी हुई पत्तों वाली बेल फ़सलें ली जाती हैं तथा ऊपर के जाल मे फैलाई जाती हैं। कटी हुई पत्तों वाली बेल फ़सले इसलिए ली जाती हैं ताकी धूप फिल्टर हो कर आ पाय और मंडप की फसलों को आधी धूप आधी छांव मिले, जिससे की फसलें कडी धूप में झुलसे न और कड़ाके की ठंड से प्रभावित न हों।

5. देसी पपीता जाले के ऊपर 7 से 8 फीट पर लगाए जाते हैं जो की 12-18 फीट की दूरी पर लगाया जाता है।

5 लेयर कैसे कीट-पतंगों से फसल की सुरक्षा करता है –

- 5 लेयर माडल की एक और खास बात है की इसे 7 फीट की ऊंचाई तक चारोंतरफ से साड़ी/नेट से ढका जाता है ।
- फलस्वरूप खरपतवार के बीज या हानि पहुंचाने वाले कीट बाहर से उड़कर नहीं आ पाते ।
- बाहर से कीट का आना नियंत्रित रहने से तथा मंडप के अंदर खरपतवार कम रहने से कीट का प्रकोप शून्य हो जाता है।

मृदा एवं जल संरक्षण:

- वर्षा के समय यदि मिट्टी को बहने से नहीं बचाया गया तो हर साल 2 ट्राली मिट्टी 1 एकड़ खेत से बह जाती है।
- एक ग्राम मिट्टी में 1000 करोड़ जीवाणु होते हैं ।स्वयं के अनुभव के आधार पर मैं यह अनुरोध करना चाहूँगा की 1 एकड़ खेत के नीचले हिस्से में 10-10 फीट का एक गड्ढा बनाया जाए।जिसमें पूरे खेत से बहकर आने वाली मिट्टी तथा पानी इकट्ठा हो सकता है, जो की किसान का मुख्य कर्तव्य है ।मिट्टी को बचाने से तथा खेतों में दोबारा डालने से खेतों की उर्वरता बनी रहती है।

जल-प्रबंधन :

5 लेयर माडल में नालियाँ पानी की ढलान की दिशा में बनानी चाहिएँ,क्यूंकी यहाँ सब्जियों की फसलें ज्यादा लगाई जाती हैं जिन्हें कम पानी चाहिए रहता है।

•जिन स्थानों में सूर्य की किरणें 4-5 महीनों तक काफी कम गिरती हैं, वहाँ पूर्व-पश्चिम दिशा में मेढ़ बनानी चाहिए,ताकि अधिक से अधिक सूर्य की किरणें खेत में गिर सकें।

•खुले खेत में , पानी की ढलान की विपरीत दिशा में नालियाँ बनानी चाहिएँ ताकि वर्षा जल रुक-रुक कर प्रवाहित हो और अधिक से अधिक जल भूमि के अंदर जा पाये।

इसके परिणामस्वरूप भूमि के अंदर जल का स्तर बढ़ने लगता है तथा मृदा-जल संरक्षण होने पर फसल की वृद्धि अच्छी प्रकार से होती है।

__ऑरगॅनिक खेती के लिये पूर्व - आवश्यकताएं__

__A.मृदा उपचार :__

किसी भी बुवाई से पहले चूने से एवम एंटी बॅक्टेरियल फीड की मदद से मृदा का उपचार करना चाहिए।

एक एकड़ में सौ किलो चूना एवम पचास किलो नीम केक पावडर का मिश्रण छिड़किए। बेड तैयार करते समय 60 किलो मृदा में 40 किलो वर्मी कंपोस्ट मिलाना है।

__B. बीज का उपचार:__

देसी बीजों को सूर्य की किरणों में दो घंटे तक सुखाना चाहिये। इससे बीज सौर ऊर्जा ग्रहण कर लेते हैं एवं उनकी अंकुरण शक्ति बढ़ जाती है। आर्द्रता के कारण फफूंद एवं बॅक्टेरिया का जो प्रकोप होता है उससे भी बीजों की सुरक्षा हो जाती है। घोल तैयार करने के लिए हे 2 लीटर देसी गौमूत्र, 200 ग्राम धनिया पावडर और 250 ग्राम गुड मिलाएं। बीजों के ऊपर इस घोल का एक लेप लगाये और एक घंटे के लिये एक तरफ रख दें। यह घोल बीजों को एक सुरक्षा कवच प्रदान करता है जिससे कि वे लंबे समय तक खराब नहीं होते।

यदि हायब्रिड बीज हैं तो इस प्रक्रिया को करने से पहले बीजों को 12 घंटे के लिये भिगोएं। गौमूत्र हायब्रिड बीजों पर लगे केमिकल प्रिजर्वेटिव को हटाने में मदद करता है।
विकल्प के रूप में आप चूना पावडर का लेप बीजों की बुवाई से पहले लगा सकते है ।दस लीटर पानी में आधा किलो चूना पत्थर मिला दें और आधे घंटे के लिए छोड दें। बीजों को इस घोल में पाँच से दस मिनट के लिए भिगोएँ। बीजों के ऊपरी भाग को ऊपर रखते हुए बीजों को दो सेंटीमीटर की गहराई में बो दें।
पत्तेदार सब्जियां के छोटे बीजों को इस अनुपात में मिला सकते है- पचास किलो वुड ऐश में तीन किलो बीज। वुड ऐश सुरक्षा कवच का निर्माण करता है और और इसकी मदद से बीज सही अनुपात में मृदा पर फैल जाते हैं।

__C. पौधों का उपचार:__

हर 15 -20 दिनों में पौधों पर गौमूत्र का पतला घोल छिड़क सकते हैं। गौमूत्र की मात्रा पौधे की आयु पर निर्भर करेगी। गौमूत्र को 13 लीटर पानी में इस अनुपात मे मिलाएं :

◦1 लीटर - पहले 15 दिनों में।

◦1.5 लीटर - अगले महीने में।

०2 लीटर - दो महीने से अधिक पौधों में।

तरल आर्गेनिक खादें जैसे कि मटकाखाद, वर्मीवाश पौधों को हर दस दिन मे स्प्रिंकलर से या पानी के साथ दे सकते हैं।

<u>बीजों को बढ़ाना एवं सुरक्षा करना:</u>

यह अतिआवश्यक है कि जिन बीजों को बीज बढ़ाने के लिये प्रयोग किया जा रहा है वे स्वस्थ हों, मजबुत हों एवम जेनेटिक रूप से शुद्ध हों।अतः इन बीजों को एक अलग स्थान पर डाला जाता है। निम्नलिखित तकनीकों का प्रयोग करके हम भविष्य में अच्छे किस्म के बीज पा सकते हैं:

A.एक प्रकार के करीब 100 पौधे उगाने के लिए एक अलग नर्सरी तैयार करें।

B. अंकुरण की प्रक्रिया के समय कम रेट से अंकुरण होने वाले बीजों को नर्सरी से हटा दें।

C. बीजों की बुवाई के पश्चात ध्यानपूर्वक धीरे उगने वाले, अजीब प्रकार से उगने वाले एवम कमजोर पोधों को छाट लें और उन्हें वहाँ से हटा दें। पौधों को लगातार खादें देते रहें।

D. फूल एवम फल निकलते समय भी कमजोर फलों को हटा दें, केवल स्वस्थ फलों को ही पौधों पर रहने दे क्योंकि हम अच्छे फलों के ही बीज भविष्य के लिए रखेंगे जिनमें मूल पौधे के गुण हों और रूप रंग मे भी मूल पौधे जैसे हों।

E. फूलों और फलों को तभी तोड़ा जाता है जब वे पौधों पर पक चुके हों ,फिर उनको सुखाया जाता है ताकि उनसे बीज निकाल सकें।

F. फिर इन बीजों का उपचार उसी प्रकार करें जैसा की खंड 1.B में बताया जा चुका है

G. इन बीजों को हम एक साल तक स्टोर कर सकते है। मिट्टी के घड़े के भीतरी भाग में समान मात्रा में लिये गए चूने और गुड के घोल का लेप लगा दें।इस घड़े को धूप में सुखायें और फिर बीज़ों को इस वायु-रोधक घड़े में सुरक्षित कर लें।

<u>पशु प्रबंधन :</u>

<u>A. देसी गाय की पहचान</u>

आर्गेनिक खेती के लिए आवश्यक है कि हमारे पास शुद्ध नस्ल की देसी गाय हो। देसी नस्ल की गाय को पहचानने के लिये ये हमें उनकी की अच्छी पहचान होनी चाहिये। निम्नलिखित बातों से हम पहचान सकते है की गाय देसी नसले कि है की नहीं :

a. देसी गाय कापने लगती है जब हम उसे छूते हैं।

b. देसी गाय का कूबड़ अलग प्रकार का होता है और गाय जब चलती है तब वह एक साईड से दुसरे साईड हिलता है।

c. देसी गाय की पूंछ में घने एवम लंबे बाल होते है।

<u>B.चारा प्रबंधन</u>

गाय को संतुलित आहार खिलाना चाहिए ताकि खेत का पोषण चक्र अच्छा हो सके। संतुलित आहार खिलाई हुई गाय उत्तम कोटी का दूध एवम गोबर उत्पन्न करती है ।नीचे एक संतुलित आहार का प्लान दिया गया है,जिसमें संसाधनों की उपलब्धता-अनुसार बदलाव किये जा सकते हैं :

1.1 केलो चना दाल , 1 किलो गेहूं,1 किलो जवार, 1 किलो बाजरा,1 किलो मक्के के आटे का एक मिश्रण तैयार करें।150-200 ग्राम पिसा हुआ गुड़ भी मिला दें। इस मिश्रण का दलिया तैयार करें और 250 ग्राम.दलिया हर सुबह-शाम गाय को दें।

2.इस दलिये में 25-25 ग्राम शतावर ,अश्वगंधा और सफ़ेद मूसली के पत्ते का पाउडर भी मिला सकते हैं।

3.कैल्शियम के स्रोत के लिए 1 किलो चूना 5 लीटर पानी में मिला दें।इस पानी को गाय के भूसे में मिला दें।ऐसा 3 किलो भूसा गाय को हर सुबह-शाम खिलाना है। आप गाय को चराने के लिए हरा चारा,हिरामणी,झिंगवा,नीलमणि आदि उगा सकते है

4. गाय के शरीर में प्रतिपिंड (एंटीबॉडी) के विकास के लिये 250 ग्राम अजोला घास सुबह शाम खिलाया जा सकता है। अजोला घास को 10 फ़ीट,× 3 फ़ीट बेड में उगाया जा सकता है। अजोला कल्चर में दो किलो चूना ,दो किलो मिट्टी और दो किलो खाद मिला दें।

5. नमक के स्रोत के रूप में सेंधा नमक गाय को दिया जा सकता है। सेंधा नमक के पत्थर का एक बड़ा टुकडा चारे के स्थान पर रख दें ताकि गाय उसे चाट सके जब उसका मन करे।

C. गोबर खाद का उपचार

यह आवश्यक है कि ताज़े गोबर खाद का उपचार शीघ्र किया जाये ताकि उसके पोषक तत्व बने रहें। यदि गोबर खाद का उपचार नहीं किया जाता है तो कीट एवम कीड़े उस पर आक्रमण करते हैं और साथ ही साथ वह अपने पोषकतत्वों एवम आद्रता को खो देता है ।

गोबर खाद का उपचार करने का सबसे अच्छा तरीका है बायोगॅस प्लांट।बायोगॅस प्लांट गोबर खाद से मिथेन गॅस को अलग कर देता है ,स्थिरता प्रदान करता है एवम पोषक तत्व बनाये रखने में मदद करता है। बायोगॅस प्लांट से जो स्लरी उत्पन्न होती है उसे वर्मीकंपोस्ट में प्रयोग में लाया जा सकता है।
मिथेन गैस जो उत्पन्न हुई है उसे रसोई मे ईंधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। बाजार में बायोगॅस प्लांट लगभग आठ हजार रुपये में मिल जाता है।

गौशाला का निर्माण :

a.गायों के लिए तनावमुक्त, स्वच्छंद पर्यावरण तैयार करने के लिए विशेष ध्यान देना चाहिए। निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:

a. गौशाला की छत तुलनात्मक रूप से गर्मी के मौसम मे ठंडी रहनी चाहिए एवम थंड के मौसम मे गरम रहनी चाहिये। मिट्टी की टाईलें छत के लिये अच्छी रहती है।

b. गौशाला का फर्श कॉंक्रीट का नहीं बना होना चाहिये, सामान्य मिट्टी या गोबर का फर्श गाय के लिये सबसे ज्यादा उपयुक्त होता है। गौशाला का एक हिस्सा ठोस बनाया जा सकता है जहां पर गाय गोबर दे सके और गोबर इकट्ठा करने में आसानी रहे।

c. गाय के चारे का स्थान जमीन के स्तर से ऊपर नहीं उठा होना चाहिये। उसके चारो ओर दीवार उठा सकते है परंतु उसका फर्श जमीन के स्तर पर ही होना चाहिए।

d. गाय को ताजे और अच्छे पानी की सुविधा प्रदान करनी चाहिये। पीने वाला पानी रोज साफ करना चाहिये और बचे हुए जल का प्रयोग गौशाला साफ करने में कर सकते है

e. गाय को कम से कम 400 sq.feet का स्थान चरने के लिए उपलब्ध कराना चाहिए। गायके चरने के स्थान में औषधीय पौधे लगाये जा सकते हैं जैसे कि अश्वगंधा, शतावर इत्यादि। चरने के स्थान पर शीशम लगाना लाभकारी होता है।

केंचुआ खाद :

केंचुआ खाद एक उत्तम खाद है जो की यूरिया का विकल्प है तथा रोक-फोसफेट मिलाने से यह डी.ए.पी का उत्तम विकल्प बन जाता है ।

शेड बनाने की बिधि :

१. जिस जमीन पर शेड बनाया जाए वह 5 इंच ढाल वाली होनी चाहिए ।
२. केंचुआ खाद के बेड को हम जमीन पर डालते हैं तथा इसके बाजू के अंदर की तरफ निशान करते है ।
३. निशान किए हुए स्थानों पर 1.25 फीट के बांस के डंडे लगाए जाते हैं जो कि अंदर की तरफ झुका हुआ होना चाहिए ।
४. बैग के निचले सतह पर ढलान की दिशा में एक छेद कर दिया जाता है तथा पी।वी।सी पाईप जोड़ दिया जाता है, जिससे कि गोबर तथा कैंचुए के शरीर का अर्क इकट्ठा किया जा सके ।
५. बैग में 20 दिन पुराना 700 किलो अध-पक्का गोबर भरा जाता है तथा 300 किलो रोक फॉस्फेट उसमें मिलाया जाता है , इस मिश्रण में 5 किलो देसी कैंचुआ भर दिया जाता है ।
६. इस बैग को जूट की बोरी से ढका जाता है तथा हर पांचवे दिन इस पर पानी का छिड़काव किया जाता है ।
७. हर पंद्रहवे दिन इस खाद को ऊपर से निकाल लिया जाता है और इस प्रकार हम एक पिट को 45 से 60 दिन के अंदर खाली कर सकते है ।
८. इस ताज़ी निकली हुई खाद को 30 दिन बाद प्रयोग में लिया जाता है ।
९. कैंचुओं की संख्या बढ़ाने के लिए शीत और वर्षा ऋतु में 2kg सरसों की खल 15 ली. पानी में 24 घंटों के लिए भिगोकर छिड़क देवें |
१०. गर्मी के दिनों में 2 ली. छाछ और 2 किलो गुड़ के साथ मिलाकर 15 ली. पानी में घोल बनाएँ और छिड़क देवें |

•इन उपायों से कैंचुओं में गुणोत्तर वृद्धि होती है तथा खाद जल्दी बन जाती है |

•देसी कैंचुओं के अंडे 18वें रिंग पर होती है जब की विदेशी कैंचुओं के 28वें रिंग पर |

जैविक खादें एवम कीटनाशक

A.मटकाखाद

निम्नलिखित वस्तुओं को मिट्टी.के घड़े में अच्छी प्रकार मिलाएं और सात दिनों के लिए छांव में रख दें। यँह खाद पत्तों और टहनियों के बढ़ने और विकास के लिये प्रयोग में लाई जा सकती हैं-

1. 10 किलो ताजा गोबर
2. 10 लीटर गौमूत्र
3. 1 किलो [illegible] (1 साल पुराना)

4. 1 किलो उड़द दाल का आटा
5. 1 किलो सरसों की खली

B.बांस की खाद

1. सूखे बांस के पत्ते
2. 10 किलो मिट्टी
3. 2 किलो मसले हुए आलू 5 ली.पानी में

C. जीवामृत

जीवामृत बिना बेसन या सरसों की खली की मटका खाद है। इनके बजाये उसमें एक किलो मिट्टी तथा 1 किलो बेसन मिलाई जाती है।

D. नीमोफ़ास

70 प्रतिशत नीम पावडर,30 प्रतिशत रॉक-फॉस्फेट। प्रयोग करने से पहले 90 दिनों तक फर्मेंट करें।

E. रस चूसक कीटों के लिए कीटनाशक

2 केलो नीम के पत्ते, 2 किलो सीताफल के पत्ते , 2 केलो बेशरम के पत्ते, 1किलो कॅस्टर पत्ते, 1 किलो तंबाकू के पत्ते, 1 किलो सफेद ऑंकड़े के पत्ते 20 लीटर गौमुत्र में मिलाएं और 21 दिनों के लिए छोड़ दें।प्रयोग करते समय बने हुये घोल का 500 मिली.ली 15 लीटर पानी में मिलाएं और फसल पर छिड़क दें।

F. तना वेधने वाले कीटों के लिये कीटनाशक

2 किलो नीम के पत्ते,2 किलो सीताफल के पत्ते,2 किलो बेशरम पत्ते ,तीखी हरी मिर्चें,1 किलो एरंड के पत्ते,1 किलो तंबाखू पत्ते एवम सफेद ऑंकड़े के पत्ते,250 ग्राम अदरक को 20 लीटर गौमूत्र में मिलाएं और 21 दिनों के लिए छोड़ दें। प्रयोग करते समय बने हुये घोल का 500 मिली.ली.15 लिटर पानी में मिलाना है और फसल पर छिड़कना है।

G. एफिड के लिए कीटनाशक

60 दिन पुरानी छाछ,300 ग्राम तीखी हरी मिर्चे, 150 ग्राम अदरक का पेस्ट 15 लीटर पानी में मिलाना है और फसल पर छिड़कना है।

H.वर्मी वाश और वर्मीफास

प्रत्येक वर्ष प्रत्येक एकड़ में 500 लीटर वर्मी वॉश(पतला घोल) स्प्रिंकलर के द्वारा छिड़कना है। पौधों की बुवाई और फलों के कालखंड में वर्मीफास (वर्मी कंपोस्ट में राक-फास्फेट मिलाकर बनाया गया) दिया जा सकता है।

आनुमानिक उत्पादन :

फसल	आमदानी(कुईंटाल में)	मूल्य	विक्री
अदरक	50	7000	3,50,000/-
धनीया	50	1200	60,000/-
कुंदरु	200	500	1,00,000/-
पपीता	150	700	1,05,000/-
करेला	60	2000	1,20,000/-
		कुल	7,35,000/-

मल्टी लेयर के लिए फसलों का चुनाव :

क्र.	महिने	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
1	जानुयारी	टमाटर	मूली	करेला/लौकी/टिंडा/छछिन्द्रा	
2	जानुयारी	अरहर	स्वीट कॉर्न	हरी मिर्च / बैंगन	
3	15 जान – 15 फेव	टमाटर	पपीता	मूली /खीरा /शलजम	करेला/लौकी/टिंडा/छछिन्द्रा
4	फेब्रुअरी	अदरक	पपीता	करेला/लौकी/टिंडा/छछिन्द्रा	-----/धनीया /------ /धना
5	फेब्रुअरी	हल्दी	करेला	-----/धनीया /------ /धना	
6	फेब – 15 मार्च	अदरक	मक्का /स्वीट कॉर्न	खरबूजा /तरभूज /खीरा /कद्दू /-----	
7	मार्च	अर्वी	मक्का /स्वीट कॉर्न	-----/धनीया /------ /धना	
8	एप्रिल	अदरक	पपीता		
9	मई	अदरक	धनीया	अरहर	
10	15 जून	मुंहफली	स्वीट कॉर्न		
11	15 जून	अदरक	अरहर	पपीता	
12	सेप्टेम्बर – ओक्टोबर	धना के बीज	प्याज /आलू /लहसुन		

भारतीय देशी गाय व विदेशी गाय में अन्तर

क्र. सं.	भारतीय देशी गाय	विदेश गाय जर्सी, होलस्टाईन, फ्रिजियन आदि
	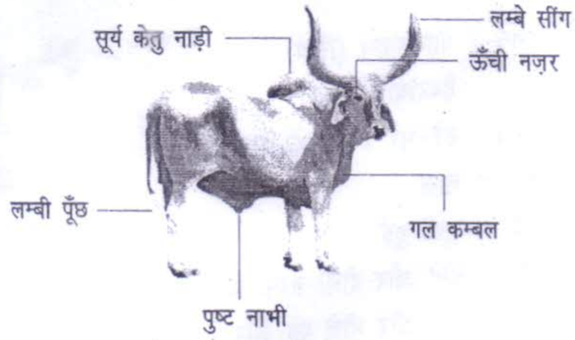	
1.	इन्हें 'बोस इन्डीकस' कहा जाता है, इसमें बीटा-केसीन ए-2 प्रोटीन पाया जाता है, जो स्वास्थय के लिए हितकारी है।	इसमें बीटा केसीन ए-1 प्रोटिन पाया जाता है, जो विष जैसा है।
2.	प्रोफेसर एन.एन. गोडबोले के अनुसार गाय के दूध में कार्बोहाइड्रेट, लवण, वसा, क्षार, अल्युमिनाइड तथा कई विटामिन होने के कारण यह एक सम्पूर्ण श्रेष्ठ आहार है।	झब बीटा केसीन ए-1 दूध प्रोटिन का पाचन होता है तब एक विषयुक्त लघु प्रोटिन का निर्माण होता है जो अनेक गम्भीर स्वास्थ्य समस्याओं के लिए जिम्मेदार है।
3.	गाय के दूध में स्ट्रोनटियम तत्व है, जो अणुविकिरण (रेडिएशन) का प्रतिरोधक है।	नहीं है।
4.	गाय के दूध में सेरीब्रोसाइड होता है, जो मस्तिष्क एवं बुद्धि के विकास में सहायक है और अम्लपित्त एवं पेट की गर्मी को शांत करता है।	नहीं है।
5.	गाय की रीढ़ में सूर्यकेतु नाड़ी होती है, जो सूर्य के प्रकाश में जागृत होती है। इससे स्वर्णक्षार बनता है, जो रोग निरोधक शक्ति को बढ़ाता है, जो केवल माँ के दूध के अलावा अन्य किसी में नहीं पाया जाता है।	नहीं है।
6.	गाय के दूध से कोलेस्ट्राल नहीं बढ़ता, इससे ह्रदय एवं धमनियों में रूकावट का निवारण होता है।	नहीं है।
7.	गाय का घी बिलौना किया हुआ (दही को मथकर बनाया हुआ) उसकी 2-2 बूंद नाक में डालने से सरदर्द, माईग्रेन, याददाश्त, आँखो में जलन, कानकी तकलीफ, अनिद्रा, एलर्जीक अस्थमा, तनाव आदि रोगों पर रामबाण की तरह अचूक काम करता है।	नहीं है।
8.	गौमूत्र शिघ्रपाचक है। मस्तिष्क के लिए शक्तिवर्धक, कफ-वात, नेत्ररोग, कुष्ठ रोग, अतिसार, सफेद दाग, मोटापा, कब्ज, दमा, सभी प्रकार के केशरोग, यौन रोग, ह्रदयरोग तथा उच्च रक्तचाप आदि में उपयोगी है।	नहीं है।
9.	भारतीय नस्लों का गौमूत्र 104 प्रतिशत तक मनुष्य की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।	नहीं के बराबर है।
10.	सूर्योदय और सूर्यास्त के समय देशी गाय के कण्डे को जलाकर उसमें 3 चिमटी साबुत चावल व देशी गाय का घी 5-10 मिली डालने से जो धुआँ निकलता है, उससे वातावरण में प्राणशक्ति की वृद्धि होती है तथा वातावरण में उपस्थित कीटाणुओं का नाश होकर वातावरण शुद्ध व निर्मल होता है।	ऐसा कोई गुण नहीं है।
11.	गाय के मूत्र में करक्युमिन होता है, जो कैंसर के बिमारियों में कार्य करता है।	नहीं है।

भारत की मूल प्रजाति की गायें और उनके गव्यों के गुण धर्म

गीर

स्थान : सम्पूर्ण गुजरात
जीवन : हरे-भरे वन क्षेत्रों के लिए
रंग : लाल, कभी-2 उजली और काली
दृष्टि : मध्यम
सींग : छोटा और फैला हुआ, पीछे की ओर
कान : छोटा मुड़ा हुआ
गव्य : कफ प्रधान

लाल सिंधी

स्थान : पाकिस्तान (सिंध), हैदराबाद जिला
जीवन : हरे-भरे प्रदेशों के लिए
रंग : लाल
दृष्टि : झुकी हुई
सींग : छोटे और दोनों तरफ फैले हुए
कान : छोटे और नीचे की ओर
गव्य : कफ को संतुलित करने वाला

साहिवाल

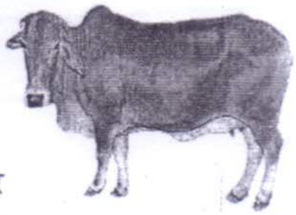

स्थान : पंजाब
जीवन : हरे-भरे प्रदेशों के लिए
रंग : लाल
दृष्टि : मध्यम
सींग : छोटे एवं नीचे की ओर
कान : छोटे और नीचे की ओर
गव्य : कफ संतुलित करने वाला

हल्लीकर

स्थान : मैसूर, मंडया, बेंगलुरू, कोलर, तुमकुर, हसन एवं चित्रदूर्ग
जीवन : पहाड़ी और सूखे प्रदेशों के लिए
रंग : उजली
दृष्टि : मध्यम पर ऊँची
सींग : बड़े और पास-2
कान : छोटा और सामने की ओर
गव्य : उच्च वात्त नाशक

अमृत महल (बेन्ने चवड़ी)

स्थान : हसन, चिकमंगलूर एवं चित्रदूर्ग जिला कर्नाटक
जीवन : सूखे क्षेत्र में रहने वाली प्रजाति
रंग : भूरी, उजली, काली
दृष्टि : मध्यम
सींग : लम्बा और सटा हुआ
कान : छोटे और सीधा
गव्य : वात्त नाशक, त्रिदोष नाशक

खिल्लारी

स्थान : बिजापुर ओर सोलापुर कर्नाटक
जीवन : सूखे पहाड़ी प्रदेशों के लिएं
रंग : उजली और काला रंग मिला हुआ
दृष्टि : मध्यम पर ऊँची
सींग : मध्यम और दोनों तरफ
कान : छोटे और सामने की ओर
गव्य : वात्त नाशक

भारत की मूल प्रजाति की गायें और उनके गव्यों के गुण धर्म

कांगायम

स्थान : ईरोड, दिंडिगल व कोयम्बटूर, तमिलनाडु
जीवन : पहाड़ी और सूखे प्रदेशों के लिए
रंग : मिला-जुली, काली एवं उजली
दृष्टि : मध्यम पर सामने
सींग : बड़े और ऊँचे
कान : छोटा सामने की ओर
गव्य : उच्च वात्त नाशक एवं मध्यम त्रिदोष नाषक

बरगूर

स्थान : ईरोड, तमिलनाडु
जीवन : सूखे क्षेत्र में रहने वाली प्रजाति
रंग : लाल और उजली मिला चितकबरी
दृष्टि : मध्यम पर सीधी
सींग : थोड़ा लम्बा और मध्यम दूरी पर
कान : छोटा और सीधा
गव्य : त्रिदोष के रूप में मध्यम त्रिदोष नाषक

उम्बलाचेरी

स्थान : तंजाऊर, तिरूवन्नामलै, तमिलनाडु
जीवन : सूखे प्रदेश के लिए
रंग : काली एवं उचली मिला हुआ चितकबरी
दृष्टि : मध्यम
सींग : मध्यम एवं ऊँचा
कान : छोटा सामने की ओर।
गव्य : त्रिदोष नाशक मध्यम त्रिदोष नाषक

पुलियमकुलम

स्थान : रामनाथपुरम, दिंडिगल, मदुरै, शिवगंगै, तमिलनाडु
जीवन : सूखे क्षेत्र में
रंग : काला रंग में थोड़ा उजला के साथ
दृष्टि : मध्यम पर तेज
सींग : मोटे सिंग ऊपर की ओर ऊँचे
कान : छोटे और सामने की ओर
गव्य : त्रिदोश नाशक

अलमबाड़ी

स्थान : कावेरी नदी, सेलम, धर्मपुरी, तमिलनाडु
जीवन : वनस्पत्ति युक्त मैदाणी क्षेत्रों के लिए
रंग : लाल मिला हुआ काला रंग
दृष्टि : मध्यम पर तेज
कान : छोटे और सामने की ओर।
गव्य : त्रिदोष नाशक
सींग : बड़े और गोल आकृति लिए हुए आकाश की ओर

थारपारकर

स्थान : राजस्थान
जीवन : सूखे प्रदेश के लिए
रंग : उजला एवं काला मिला हुआ
दृष्टि : मध्यम
सींग : छोटे एवं नीचे की ओर
कान : छोटे और सामने की ओर
गव्य : वात्त दोष नाशक

भारत की मूल प्रजाति की गायें और उनके गव्यों के गुण धर्म

हरियाणवी

स्थान : रोहतक, गुड़गाँव एवं हिसार
जीवन : मैदानी क्षेत्र के लिए
रंग : गाय उजली, नंदी के गर्दन पर काला रंग मिला हुआ
दृष्टि : मध्यम
सींग : छोटे और दो तरफ
कान : छोटा और सामने की ओर
गव्य : उच्च वात्त नाशक

कांकरेज

स्थान : कच्छ, गुजरात और जोधपुर, राजस्थान
जीवन : पहाड़ी और सूखे कंटिले प्रदेशों के लिए
रंग : उजली, साथ में काली भी
दृष्टि : ऊँची
सींग : ऊँचे वे आकाश को छूते हुए
कान : छोटे सामने की ओर
गव्य : उच्च वात्त नाशक

ओंगल

स्थान : नेल्लूर, आन्ध्र प्रदेश
जीवन : सूखे प्रदेशों के लिए
रंग : सफेद
दृष्टि : मध्यम
सींग : छोटे और ऊँचे
कान : मध्यम सामने की ओर
गव्य : वात्त को संतुलित करने वाला

देवनी

स्थान : बिदर, कर्नाटका
जीवन : सूखे क्षेत्र में रहने वाली ऊँची प्रजाति
रंग : लाल, काली और उजली मिला चितकबरी
दृष्टि : मध्यम
सींग : छोटे और फैला हुआ
कान : मध्यम
गव्य : त्रिदोष के रूप में मध्यम

कृष्णा

स्थान : कृष्णा नदी के किनारे, कर्नाटक
जीवन : हरे-भरे मैदानी प्रदेशों के लिए
रंग : उजली
दृष्टि : मध्यम पर ऊँची
सींग : मध्यम और दोनों तरफ
कान : छोटे और सामने की ओर
गव्य : वात्त नाशक

केरिघर

स्थान : लखीमपुर, उत्तर प्रदेश
जीवन : पहाड़ी प्रदेशों के लिए
रंग : उजली, कभी-2 सफेद-काली भी
दृष्टि : मध्यम पर ऊँची
सींग : छोटे और दोनों तरफ
कान : छोटा सामने की ओर
गव्य : वात्त नाशक

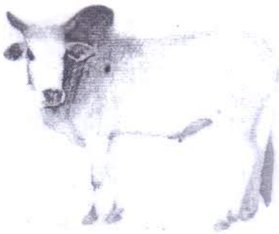

भारत की मूल प्रजाति की गायें और उनके गव्यों के गुण धर्म

पोनवार

स्थान : पीलीभीत, उत्तर प्रदेश
जीवन : सूखे प्रदेशों के लिए
रंग : उजली एवं काली चितकबरी
दृष्टि : मध्यम
सींग : छोटे एवं दोनों तरफ आकाश की ओर
कान : छोटे और सामने की ओर
गव्य : त्रिदोष एवं वात्त को संतुलित करने वाला

नागौरी

स्थान : नागौर, राजस्थान
जीवन : सूखे प्रदेशों के लिए
रंग : उजली
दृष्टि : मध्यम
सींग : मध्यम और दोनों तरफ आकाश की ओर
कान : मध्यम और नीचे की ओर
गव्य : वात्त नाशक

गाओलाओ

स्थान : वर्धा, महाराष्ट्र दक्षिण मध्य प्रदेश
जीवन : मध्यम, न ज्यादा सूखा और न ही हरा-भरा
रंग : उजली और काली मिला हुआ
दृष्टि : मध्यम
सींग : छोटे और फैला हुआ, पीछे की ओर
कान : छोटा और सीधा
गव्य : उच्च कोटी का त्रिदोष नाशक

केनकथा

स्थान : ललीतपुर व हमीरपुर उ0प्र0 एवं टिकमगढ़, म0प्र0
जीवन : हरे-भरे प्रदेशों के लिए
रंग : काली एवं उजली
दृष्टि : मध्यम पर ऊँची
सींग : छोटे और दोनों तरफ
कान : छोटे और सामने की ओर
गव्य : त्रिदोष नाशक

मालवी

स्थान : मालवा, मध्य प्रदेश एवं झालावाड़, राजस्थान
जीवन : सूखे प्रदेशों के लिए
रंग : भूरी और उजली
दृष्टि : मध्यम
सींग : मध्यम व दोनों तरफ आकाश की ओर
कान : छोटे और नीचे की ओर
गव्य : वात्त नाशक

डांगी

स्थान : नासिक, महाराष्ट्र
जीवन : सूखे क्षेत्र में रहने वाली मध्यम प्रजाति
रंग : लाल, काली और उजली मिला चितकबरी
दृष्टि : ऊँची और सीधी
सींग : छोटा और मध्यम दूरी पर
कान : छोटा और सीधा
गव्य : त्रिदोष के रूप में मध्यम

भारत की मूल प्रजाति की गायें और उनके गव्यों के गुण धर्म

राठी

स्थान : पश्चिमी राजस्थान
जीवन : सूखे प्रदेशों के लिए
रंग : उजली एवं चितकबरी
दृष्टि : मध्यम
सींग : छोटे और दोनों तरफ आकाश की ओर
कान : छोटे और सामने की ओर
गव्य : वात्त को संतुलित करने वाला

गंगातीरि

स्थान : बिहार और उत्तर प्रदेश में गंगा नदी के किनारे
जीवन : हरे-भरे क्षेत्र में रहने वाली मध्यम प्रजाति
रंग : केवल उजली
दृष्टि : मध्यम
सींग : छोटा और फैला हुआ
कान : छोटा और नीचे की ओर
गव्य : उच्च कोटी का वात्त नाशक

पुंगानूर

स्थान : चित्तुर, पुत्तुर, नगरी (आन्ध्र प्रदेश)
जीवन : हरे-भरे क्षेत्र के लिए
रंग : सफेद रंग की (थोड़ा काला मिला हुआ)
दृष्टि : ऊँची और तेज
सींग : छोटे और पीछे की ओर मुड़े हुए
कान : छोटा और सामने की ओर
गव्य : वात्त संतुलित करने वाला

महाकोंगा

स्थान : कावेरी नदी, धर्मपुरी, तिरूचिरापल्ली, सेलम तमिलनाडु
जीवन : वनस्पति युक्त मैदानी क्षेत्रों के लिए
रंग : काला रंग सफेद मिला हुआ
दृष्टि : मध्यम पर तेज
सींग : बड़े, मोटे और गोल आकृति लिए हुए आकाश की ओर
कान : छोटा और सामने की ओर
गव्य : त्रिदोष नाशक

वेच्चुर

स्थान : वेच्चुर, केरल
जीवन : वनस्पति युक्त जंगली क्षेत्रों के लिए
रंग ; लाल एवं कुछ भूरा युक्त
दृष्टि : मध्यम पर तेज
सींग : छोटे और नीचे की ओर
कान : छोटे और सामने की ओर।
गव्य : त्रिदोष नाशक

बिझारपुरी

स्थान : उड़ीसा
जीवन : मैदानी क्षेत्र के लिए
रंग : लाल, काली एवं उजली
दृष्टि : मध्यम पर ऊँची
सींग : मध्यम
कान : छोटा सामने की ओर
गव्य : उच्च वात्त नाशक

भारत की मूल प्रजाति की गायें और उनके गव्यों के गुण धर्म

कासरगोड़

स्थान : कासरगोड़, केरल
जीवन : हरे-भरे पहाड़ी प्रदेशों के लिए
रंग : काली
दृष्टि : मध्यम पर ऊँची
सींग : छोटे और दोनों तरफ
कान : छोटा सामने की ओर।
गव्य : त्रिदोष नाशक

जावरी

स्थान : हुबली व बिजापुर, कर्नाटक
जीवन : हरे पहाड़ी और सूखे प्रदेशों के लिए
रंग : लाल
दृष्टि : मध्यम व सामने
सींग : मध्यम व फैले हुए
कान : छोटे और सामने की ओर
गव्य : कफ को संतुलित करने वाला

निमारी

स्थान : नर्मदा नदी के किनारे
मध्य प्रदेश
जीवन : सूखे प्रदेशों के लिए
रंग : लाल एवं उजली चितकबरी
दृष्टि : मध्यम
सींग : छोटे और दोनों तरफ पीछे की ओर झुके हुए
कान : मध्यम और सामने की ओर
गव्य : कफ एवं वात्त को संतुलित करने वाला

मलैमाडु

स्थान : कोल्लीमलै, तमिलनाडु
जीवन : वनस्पति युक्त पहाड़ी क्षेत्र के लिए
रंग : लाल और सफेद रंग में
दृष्टि : मध्यम पर तेज
सींग : छोटे
कान : छोटे और सामने की ओर
गव्य : वात्त नाशक

लाल कंधारी

स्थान : नांदेड़, महाराष्ट्र
जीवन : हरे-भरे पहाड़ी और सूखे प्रदेशों के लिए
रंग : लाल
दृष्टि : मध्यम पर ऊँची
सींग : छोटे और दोनों तरफ फैले हुए
कान : मध्यम सामने की ओर
गव्य : कफ संतुलित करने वाला

तिरुवन्नामलै

स्थान : तिरुवन्नामलै, विलिपुरम
दिंडिवनम (तमिलनाडु)
जीवन : सूखे क्षेत्र की
रंग : हल्का लाल रंग
दृष्टि : मध्यम पर तेज
सींग : पतले और लम्बे सींग, ऊपर की ओर ऊँचे
कान : छोटे और सामने की ओर
गव्य : कफ संतुलित करने वाला

मध्यप्रदेश शासन वा अन्य राज्यों में किसानो को कृषि में मिलने वाली सहायता एवं योजनो का विवरण

S.No.	Name of the scheme	Hectare	Total cost0	Subsidy %	किसान अंशदान	शासन का अनुदान
01	सब्जी विस्तार	1	50000	40	30000	20000
02	पुष्प विस्तार	1	150000	40	90000	60000
03	मसाला विस्तार	1	30000	40	18000	12000
04	पुराने बगीचे	1	40000	50	20000	20000
05	संरक्षित,मल्चिंग	1	32000	50	16000	16000
06	कीट प्रवंधन	1	4000	30	2800	1200
07	मधुमक्खी पालन	1	20000	40	12000	8000
08	पावर टिलर	1	150000	50	75000	75000
09	पेक हाउस	1	400000	50	200000	200000
10	प्रधानमंत्री सिचाई	1		40		
11	ओषधिय खेती	1		20		
12	यंत्रीकरण	1		50		
13	50म.ट. प्याज	1	350000	50	175000	175000
14	फल विस्तार	1		40		
15	परंपरागत कृषि विकास	1	50000	100	00000	50000
16	पावर स्प्रे पम्प	1	50000	50	25000	25000
17	गार्लिक ऑनियन प्लान्टर	1	60000	50	30000	30000
18	बेल विस्तार	1	40000	50	20000	20000
19	सर्पगंधा	1	62500	50	31250	31250
20	नर्सरी स्थापना	4	2500000	40	1500000	1000000

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे -उन्नत कृषि अभियान परिसद राजीव नगर तिली सागर मध्यप्रदेश मोबाइल 09179066275

फोर लेयर मॉडल(four layer model): आकाश , जैविक कृषि विशेषज्ञ

सागर, मध्यप्रदेश Ph no : (+91)9179066275.

फोर लेयर फार्मिंग मॉडल(Four layer farming model)

क्र.सं.	फसलों के नाम	रोपाई के लिए उपयुक्त माह
1	अदरक + चोलाई + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
2	अदरक + पालक + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
3	अदरक + धनिया + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
4	अदरक + राजगीर भाजी + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
5	अदरक + लालभाजी + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
6	अदरक + नोरपा भाजी + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
7	अदरक + चोलाई + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
8	अदरक + पालक + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
9	अदरक + धनिया + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
10	अदरक + राजगीर भाजी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
11	अदरक + लाल भाजी+ कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
12	अदरक + नोरपा भाजी+ कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
13	अदरक + चोलाई + पड़ोरा + पपीता	फरबरी + मार्च
14	अदरक + पालक + पड़ोरा + पपीता	फरबरी + मार्च
15	अदरक + धनिया + पड़ोरा + पपीता	फरबरी + मार्च
16	अदरक + राजगीर भाजी + पड़ोरा + पपीता	फरबरी + मार्च
17	अदरक + लाल भाजी + पड़ोरा + पपीता	फरबरी + मार्च
18	अदरक + नोरपा भाजी + पड़ोरा + पपीता	फरबरी + मार्च
19	अदरक + चोलाई + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
20	अदरक + पालक + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
21	अदरक + धनिया + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
22	अदरक + राजगीर भाजी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
23	अदरक + लाल भाजी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
24	अदरक + नोरपा भाजी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
25	अदरक + चोलाई + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
26	अदरक + पालक + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
27	अदरक + धनिया + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
28	अदरक + राजगीर भाजी + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
29	अदरक + लाल भाजी + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
30	अदरक + नोरपा भाजी + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
31	हल्दी + चोलाई + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
32	हल्दी + पालक + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च

33	हल्दी + धनिया + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
34	हल्दी + राजगीर भाजी + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
35	हल्दी + लाल भाजी + करेला +पपीता	फरबरी + मार्च
36	हल्दी + नोरपा भाजी + करेला +पपीता	फरबरी + मार्च
37	हल्दी + चोलाई + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
38	हल्दी + पालक + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
39	हल्दी + धनिया + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
40	हल्दी + राजगीर भाजी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
41	हल्दी + लाल भाजी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
42	हल्दी + नोरपा भाजी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
43	हल्दी + चोलाई + पड़ोरा +पपीता	फरबरी + मार्च
44	हल्दी + पालक + पड़ोरा +पपीता	फरबरी + मार्च
45	हल्दी + धनिया + पड़ोरा +पपीता	फरबरी + मार्च
46	हल्दी + राजगीर भाजी + पड़ोर +पपीता	फरबरी + मार्च
47	हल्दी + लाल भाजी + पड़ोरा + पपीता	फरबरी + मार्च
48	हल्दी + नोरपा भाजी + पड़ोरा + पपीता	फरबरी + मार्च
49	हल्दी + चोलाई + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
50	हल्दी + पालक + परवल +पपीता	फरबरी + मार्च
51	हल्दी + धनिया + परवल +पपीता	फरबरी + मार्च
52	हल्दी + राजगीर भाजी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
53	हल्दी + लाल भाजी + परवल +पपीता	फरबरी + मार्च
54	हल्दी + नोरपा भाजी + परवल +पपीता	फरबरी + मार्च
55	हल्दी + चोलाई + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
56	हल्दी + पालक + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
57	हल्दी + धनिया + कुंदरू +पपीता	फरबरी + मार्च
58	हल्दी + राजगीर भाजी + कुंदरू +पपीता	फरबरी + मार्च
59	हल्दी + लाल भाजी+ कुंदरू +पपीता	फरबरी + मार्च
60	हल्दी + नोरपा भाजी+ कुंदरू +पपीता	फरबरी + मार्च
61	हल्दी + चोलाई + पड़ोरा + पपीता	फरबरी + मार्च
62	हल्दी + पालक + पड़ोरा + पपीता	फरबरी + मार्च
63	हल्दी + धनिया + पड़ोरा +पपीता	फरबरी + मार्च
64	हल्दी + राजगीर भाजी + पड़ोरा + पपीता	फरबरी + मार्च
65	हल्दी + लाल भाजी + पड़ोरा +पपीता	फरबरी + मार्च
66	हल्दी + नोरपा भाजी + पड़ोरा +पपीता	फरबरी + मार्च
67	हल्दी + चोलाई + परवल +पपीता	फरबरी + मार्च
68	हल्दी + पालक + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च

69	हल्दी + धनिया + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
70	हल्दी + राजगीर भाजी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
71	हल्दी + लाल भाजी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
72	हल्दी + नोरपा भाजी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
73	हल्दी + चोलाई + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
74	हल्दी + पालक + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
75	हल्दी + धनिया + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
76	हल्दी + राजगीर भाजी + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
77	हल्दी + लाल भाजी + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
78	हल्दी + नोरपा भाजी + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
79	अदरक + लौकी + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
80	अदरक + गिलकी + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
81	अदरक + खीरा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
82	अदरक + तोरई + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
83	अदरक + लौकी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
84	अदरक + गिलकी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
85	अदरक + खीरा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
86	अदरक + तोरई + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
87	अदरक + लौकी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
88	अदरक + गिलकी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
89	अदरक + खीरा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
90	अदरक + तोरई + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
91	अदरक + लौकी + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
92	अदरक + गिलकी + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
93	अदरक + खीरा + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
94	अदरक + तोरई + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
95	हल्दी + लौकी + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
96	हल्दी + गिलकी + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
97	हल्दी + खीरा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
98	हल्दी + तोरई + करेला + प्रपीता	फरबरी + मार्च
99	हल्दी + लौकी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
100	हल्दी + गिलकी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
101	हल्दी + खीरा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
102	हल्दी + तोरई + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
103	हल्दी + लौकी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
104	हल्दी + गिलकी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च

105	हल्दी + खीरा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
106	हल्दी + तोरई + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
107	हल्दी + लौकी + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
108	हल्दी + गिलकी + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
109	हल्दी + खीरा + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च
110	हल्दी + तोरई + टिंडा + पपीता	फरबरी + मार्च

फाइव लेयर फार्मिंग मॉडल(Five layer farming model)

क्र.सं.	फसलों के नाम	रोपाई के लिए उपयुक्त माह
1	अदरक + चोलाई + खीरा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
2	अदरक + पालक + खीरा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
3	अदरक + धनिया + खीरा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
4	अदरक + राजगीर भाजी + खीरा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
5	अदरक + लालभाजी + खीरा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
6	अदरक + चोलाई + गिलकी + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
7	अदरक + पालक + गिलकी + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
8	अदरक + धनिया + गिलकी +करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
9	अदरक + राजगीर भाजी + गिलकी + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
10	अदरक + लालभाजी + गिलकी + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
11	अदरक + चोलाई + टिंडा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
12	अदरक + पालक + टिंडा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
13	अदरक + धनिया + टिंडा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
14	अदरक + राजगीर भाजी + टिंडा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
15	अदरक + लालभाजी + टिंडा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
16	अदरक + चोलाई + खीरा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
17	अदरक + पालक + खीरा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
18	अदरक + धनिया + खीरा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
19	अदरक + राजगीर भाजी + खीरा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
20	अदरक + लाल भाजी + खीरा+ कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
21	अदरक + चोलाई + गिलकी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
22	अदरक + पालक + गिलकी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
23	अदरक + धनिया + गिलकी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च

24	अदरक + राजगीर भाजी + गिलकी + कुंदरू + पमीता	फरबरी + मार्च
25	अदरक + लाल भाजी + गिलकी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
26	अदरक + चोलाई + टिंडा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
27	अदरक + पालक + टिंडा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
28	अदरक + धनिया + टिंडा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
29	अदरक + राजगीर भाजी + टिंडा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
30	अदरक + लाल भाजी + टिंडा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
31	अदरक + चोलाई + खीरा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
32	अदरक + पालक + खीरा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
33	अदरक + धनिया + खीरा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
34	अदरक + राजगीर भाजी + खीरा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
35	अदरक + लाल भाजी + खीरा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
36	अदरक + चोलाई + गिलकी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
37	अदरक + पालक + गिलकी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
38	अदरक + धनिया + गिलकी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
39	अदरक + राजगीर भाजी + गिलकी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
40	अदरक + लाल भाजी + गिलकी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
41	अदरक + चोलाई + टिंडा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
42	अदरक + पालक + टिंडा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
43	अदरक + धनिया + टिंडा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
44	अदरक + राजगीर भाजी + टिंडा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
45	अदरक + लाल भाजी + टिंडा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
46	हल्दी + चोलाई + खीरा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
47	हल्दी + पालक + खीरा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
48	हल्दी + धनिया + खीरा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
49	हल्दी + राजगीर भाजी + खीरा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
50	हल्दी + लाल भाजी + खीरा + करेला +पपीता	फरबरी + मार्च
51	हल्दी + चोलाई + गिलकी + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
52	हल्दी + पालक + गिलकी + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
53	हल्दी + धनिया + गिलकी + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
54	हल्दी + राजगीर भाजी + गिलकी + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
55	हल्दी + लाल भाजी + गिलकी + करेला +पपीता	फरबरी + मार्च
56	हल्दी + चोलाई + टिंडा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
57	हल्दी + पालक + टिंडा + करेला+ पपीता	फरबरी + मार्च
58	हल्दी + धनिया + टिंडा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च
59	हल्दी + राज[illegible]र भाजी + टिंडा + करेला + पपीता	फरबरी + मार्च

60	हल्दी + लाल भाजी + टिंडा + करेला +पपीता	फरबरी + मार्च
61	हल्दी + चोलाई + खीरा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
62	हल्दी + पालक + खीरा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
63	हल्दी + धनिया + खीरा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
64	हल्दी + राजगीर भाजी + खीरा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
65	हल्दी + लाल भाजी + खीरा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
66	हल्दी + चोलाई + गिलकी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
67	हल्दी + पालक + गिलकी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
68	हल्दी + धनिया + गिलकी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
69	हल्दी + राजगीर भाजी + गिलकी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
70	हल्दी + लाल भाजी + गिलकी + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
71	हल्दी + चोलाई + टिंडा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
72	हल्दी + पालक + टिंडा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
73	हल्दी + धनिया + टिंडा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
74	हल्दी + राजगीर भाजी + टिंडा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
75	हल्दी + लाल भाजी + टिंडा + कुंदरू + पपीता	फरबरी + मार्च
76	हल्दी + चोलाई + खीरा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
77	हल्दी + पालक + खीरा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
78	हल्दी + धनिया + खीरा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
79	हल्दी + राजगीर भाजी + खीरा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
80	हल्दी + लाल भाजी + खीरा + परवल +पपीता	फरबरी + मार्च
81	हल्दी + चोलाई + गिलकी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
82	हल्दी + पालक + गिलकी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
83	हल्दी + धनिया + गिलकी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
84	हल्दी + राजगीर भाजी + गिलकी + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
85	हल्दी + लाल भाजी + गिलकी + परवल +पपीता	फरबरी + मार्च
86	हल्दी + चोलाई + टिंडा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
87	हल्दी + पालक + टिंडा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
88	हल्दी + धनिया + टिंडा + परबल + पपीता	फरबरी + मार्च
89	हल्दी + राजगीर भाजी + टिंडा + परवल + पपीता	फरबरी + मार्च
90	हल्दी + लाल भाजी + टिंडा + परवल +पपीता	फरबरी + मार्च.

मशरूम उत्पादन -

मशरूम एक प्रकार की फ़फूंद (fungus) है।

इनमें वनस्पतियों एवं जानवरों दोनों के प्रोटीन पाए जाते हैं।जानवरों के प्रोटीन पाए जाने के कारण से कुछ लोग इन्हें मांसाहार समझते हैं परंतु मूल रूप से ये विटामिन D से भरपूर शाकाहार हैं एवं विटामिन D के पोषण के लिए इनका सेवन मांसाहार के स्थान पर किया जा सकता है।

मशरूम की खेती वर्षा,भूमि अथवा मौसम परिवर्तन पर निर्भर नहीं करती है।अतः किसान भाई - बहन इस खेती को छोटे से स्थान में करके अधिक धनोपार्जन कर सकते हैं।

मशरूम के प्रकार -

मशरूम तीन प्रकार के होते हैं -

1.गौरमेट मशरूम

ये खाने के प्रयोग में लाए जाते हैं।उदाहरण - ढींगरी ,बटन,मिल्की आदि।

2.औषधीय मशरूम

ये औषधि के रूप में प्रयोग किए जाते हैं।उदाहरण- शिटटेक,गैनोडर्मा आदि।

3.अत्यधिक औषधीय मशरूम

इनमें औषधीय गुण अत्यधिक मात्रा में होते हैं,अतः ये औषधि के रूप में प्रयोग किए जाते हैं।उदाहरण- कार्डीसेप आदि।

ढींगरी मशरूम के प्रकार -

मशरूम		तापमान
1. सफेद	-	20 डिग्री - 25 डिग्री
2. ग्रे	-	25 डिग्री - 30 डिग्री
3.गुलाबी	-	25 डिग्री - 30 डिग्री
4.काला।	-	16 डिग्री - 18 डिग्री
5.नीला।	-	16 डिग्री - 18 डिग्री
6.पीला।	-	18 डिग्री - 20 डिग्री

ढींगरी मशरूम (10 किलो भूसे हेतु)

आवश्यक सामग्री -

- भूसा - 10 किलो
- चूना - 2 किलो
- प्लास्टिक ड्रम (200 लि.)
- रस्सी (1000 मी.)
- 2 किलो वाला ए.ल पालीथीन - 1/2किलो
- स्पान - 1 किलो

० बाँस- कमरे के अनुसार

प्रक्रिया

1.भूसे का स्टरिलाइजेशन (शुद्धिकरण)-

ठंडे व गर्म पानी में उपचार- पहले भूसे को 8 घंटों के लिए गर्म पानी में डालना है फिर अगले 8 घंटों के लिए ठंडे पानी में डालना है।

2. चूने से उपचार-

2 किलो चूने को 100 ली. पानी में घोलकर अपने भूसे को इस पानी में 14 - 16 घंटों के लिए डालना है ताकि भूसा स्टरिलाइज (शुद्ध)हो सके ।

3.शुद्धिकरण के पश्चात प्रक्रिया-

भूसे के शुद्धिकरण के बाद उसे धूप वाले दिनों(ताप. 25 डिग्री से कम) में छाँव में जमीन पर बिछाना है।ठंड के दिनों में इस भूसे को खुले स्थान में बिछाना है।बिछाना का मुख्य लक्ष्य पानी का वाष्पीकरण करना है।

गर्मी के दिनों में सबस्ट्रेट की ऊँचाई 15-20 से.मी होनी चाहिए एवं 12 घंटों के लिए सुखाना है।ठंड के दिनों में सबस्ट्रेट की ऊँचाई 1 फीट होनी चाहिए एवं 24 घंटों के लिए सुखाना है।

सबस्ट्रेट को तब तक सुखाना है जब तक उसमें 60% नमी न रह जाए।

3. स्पान को मिलाना एवं पैकिंग

1 किलो स्पान को 10 किलो भूसे में मिलाना है।

फिर जल निष्कासन के लिए पालीथीनों को नीचे से काटा जाता है।

सभी पैकेट को 70% टाइट बंद करना चाहिए एवं रबरबैंड का प्रयोग करना चाहिए।

हर पैकेट के चारों ओर 6-7 छेद करने चाहिए

और फिर फफूंदी के फैलाव एवं फ्रूटिंगके लिए पैकटों को अंधेरे कमरे में रखें।

4. तापमान , आर्द्रता एवं ताज़ी वायु

*फफूंदी के फैलाव के कालखंड में कमरे का तापमान - 20 डिग्री - 25 डिग्री ।

फ्रूटिंग के कालखंड में कमरे का तापमान - 20 डिग्री - 22 डिग्री ।

*थैले का तापमान - 20 डिग्री - 25 डिग्री ।

*आर्द्रता - 80% - 85%

* मशरूमों को प्रतिदिन 6- 8 घंटे तक ताज़ी वायु देनी चाहिए । एक्जांस्ट फैन (exhaust fan) 2 घंटों तक चलाना है।

5. उत्पादन का कालखंड एवं फसल का परिमाण -

15 दिन तक फफूंदी फैलती है ,16वें दिन फ्रूटिंग प्रारंभ हो जाती है एवं 21 वें दिन से तुडाई प्रारंभ हो जाती है।मशरूम अपने सब्सट्रेट का 70% निकलता है।

बटन मशरूम -

बटन मशरूम नत्र आधिक्य कम्पोस्ट में पैदा होने वाला एक मशरूम है।यह कम्पोस्ट हाथों से 28 दिनों में बनाया जा सकता है।

आवश्यक सामग्री -

1.गेहूँ का भूसा (3 क्विंटल)
2. पानी - 1500 ली.
3.वर्मीकम्पोस्ट - 1.5 क्विंटल
4. राक फास्फेट - 3 किलो
5. चूना पत्थर - 2.5 किलो
6.नीम तेल - 300 मि.ली (पेस्टीसाइड)
7.60 दिन पुरानी छाँछ - 3 ली. (फंगीसाइड)
8.जिप्सम - 25 किलो
9. पोटाश(K) - 3 किलो

◦खाद बनाने की प्रक्रिया (15 सितंबर - 15 अक्टूबर)-

गेहूँ के चोकर को 3 से 4 गुना पानी में 24 घंटों तक भिगोया जाता है।उसके बाद चोकर में भूसा एवं अन्य सभी सामग्रियों को मिलाया जाता है , जिप्सम को छोडकर।जिप्सम को 13वें दिन मिलाया जाता है।खाद बनाने के लिए भूसे का 5 गुना पानी लिया जाता है।फिर खाद का ढेर बनाया जाता है जिसकी लम्बाई उपलब्ध स्थानानुसार,ऊँचाई एवं चौडाई 120 से.मी होती है।

आर्द्रता हमेशा बनी रहनी चाहिए - न कम न ज्यादा।

खाद को हर तीन दिनों में पलटा जाता है,यह प्रक्रिया 24 दिनों तक की जाती है।24 दिनों बाद छाँछ एवं नीम तेल का छिडकाव किया जाता है।फिर इस खाद को 24 घंटों के लिए ढक दिया जाता है।इसके पश्चात खाद को 48 घंटों के लिए ज़मीन पर फैलाया जाता है जिसकी ऊँचाई 15 से 20 से.मी. होनी चाहिए।
पेस्टीसाइड एवं फ़ंगीसाइड का अच्छी प्रकार से छिडकाव करने के पश्चात स्पान को सब्स्ट्रेट में मिलाया जाता है।

स्पान मिलाना एवं इन्क्यूबेशन(incubation) -

1 किलो स्पान 100 किलो खाद में मिलाया जाता है ।
एक पालीथीन (26×28) को 40% भरा जाता है और बहुत ढीला बंद किया जाता है ताकि माइसीलियम (mycelium)को फैलने के लिए अच्छी प्रकार से हवा मिल सके।
फिर इन पालीथीनों को अंधेरे कमरों में (dark incubation rooms) में रख दिया जाता है जिनका तापमान 20 डिग्री - 25 डिग्री होता है।पालीथीन का तापमान 20 डिग्री - 26 डिग्री होना चाहिए।

माइसीलियम 14 -15 दिनों में फैल जाते हैं।

केसिंग (casing) -

15 दिनों बाद सब्स्ट्रेट के ऊपर रखे कवर को हटा दिया जाता है एवं casing soil डाली जाती है।

casing soil का निर्माण - 2 साल पुराना गोबर (80%) + कोकोपिट (20%)

casing soil पर पहले 3 दिनों तक नीम तेल एवं 60 दिन पुरानी छाँछ का छिडकाव करके ढक दिया जाता है।फिर 2 दिनों के लिए casing soil को खुले में रख दिया जाता है।

इस casing soil को (2 इंच की मोटाई में)बटन मशरूम के सब्स्ट्रेट पर रख दिया जाता है।

पानी डालना -

इस मशरूम की खेती में पानी की मात्रा की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है।कम या ज़्यादा पानी मशरूम को खराब कर सकता है।पानी का छिडकाव sprinkling method से करना चाहिए ताकि केवल casing soil ही भीगे।

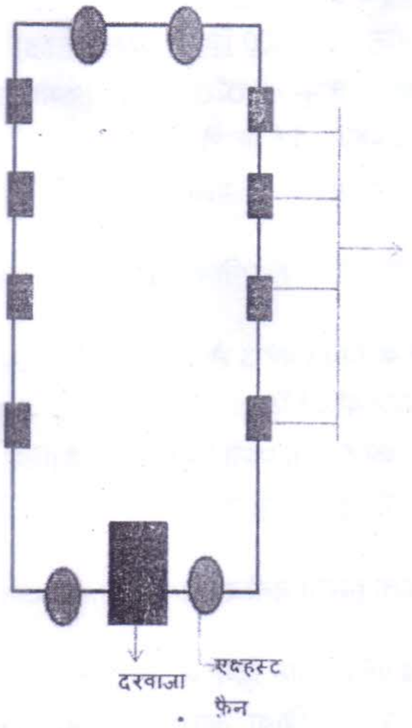

(1000 sq feet room size)

Fruiting stage(फल निकलने की अवस्था) -

बटन मशरूम का उत्पादन सब्स्ट्रेट का 15%-20% होता है।

कमरे का तापमान 16 डिग्री - 18 डिग्री,पालीथीन का तापमान 16 डिग्री - 20 डिग्री होना चाहिए।

कमरे में 70% आर्द्रता बनी रहनी चाहिए।

6-8 घंटे ताज़ी हवा देनी चाहिए एवं एग्ज़ास्ट फैन(exhaust fan) का उपयोग करना है।

सावधानियाँ -

*अच्छे उत्पादन के लिए ताज़े एवं सफ़ेद स्पान का चयन करना चाहिए।

*जब सब्स्ट्रेट में हरा या काला मोल्ड दिखाई दे तो उस भाग. को शीघ्र निकाल देना चाहिए।

*नीम तेल का छिडकाव मशरूम के कमरे की दीवारों पर करते रहना चाहिए ताकि मच्छर ;मख्की एवं अन्य कीडे मशरूम खराब न कर सकें।